पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 4, अंक 41

माह - अगस्त 2022, मूल्य - निःशुल्क

आपके विकास को समर्पित

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

माहवारी (मेंस्ट्रुअल) कप जागरूकता अभियान

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

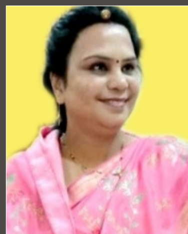

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 4, अंक - 41, अगस्त - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

1. माहवारी कप क्या है और इसका इस्तेमाल कैसे करें 4
2. मोहल्ला विकास टीम में माहवारी कप जागरूकता अभियान चलाया गया 6
3. 85 साल की आयु में शुरू किया स्टार्टअप, कमाई से खरीदी पहली कार 8
4. बच्चों को लीफी एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में करवाया जाएगा अध्ययन 10
5. मोहल्ला विकास योजना अंतर्गत भ्रमण में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार पर चर्चा 13
6. पेड़ लगाएं, आने वाली पीढ़ी का जीवन बचाएं : कपिल मलैया 15
7. कोरोना वारियर्स के सम्मान में 6-8 फीट के पौधे अब 20-25 फीट ऊंचे हो गए 17
8. समिति ने विश्वविद्यालय में रोपा दुर्लभ कल्पवृक्ष का पौधा 19
9. नई टीम का गठन 21

मीडिया कवरेज :- 22

माहवारी कप क्या है और इसका इस्तेमाल कैसे करें

आकांक्षा मलैया
सचिव
विचार समिति

माहवारी के दिनों में ज्यादातर महिलायें सेनेटरी पैड का इस्तेमाल करती हैं लेकिन माहवारी में रक्तस्राव को कपड़ों पर लगने से रोकने और संक्रमण से बचने के लिए यही एकमात्र उपाय नहीं है।

इसमें कई तरह की परेशानी आती हैं। जैसे हर माह पैड खरीदना पड़ते हैं जिसका हर माह 50 रूपये से 200 रुपये तक खर्च होता है। उसके बाद इस्तेमाल किए हुए पैड को फेंकने की समस्या।

यदि हम उपयोग किए हुए पैड को टायलेट में फेंक देते हैं तो वह जाम हो जाता है या फिर सड़क पर फेंकते हैं तो उसे कोई जानवर अपने मुंह से खोल रहा होता है। पैड प्लास्टिक से बना हुआ होता है जो गलता भी नहीं है, पर्यावरण के लिए भी यह बहुत नुकसान दायक है, स्किन के लिए भी हानिकारक होता है, इंफेक्शन का डर भी रहता है। पैड को दोबारा उपयोग भी नहीं कर सकते, अगर छह घंटे से ज्यादा या दोबारा पैड को यूज कर रहे हैं तो उससे कई तरह की बीमारियां हो सकती हैं।

इस तरह की कई समस्याओं से निपटने का एक बहुत सरल और आसान उपाय है **माहवारी कप**। कुछ महिलाओं का मानना है कि इन कप को इस्तेमाल करना सुविधाजनक होता है जबकि कई ऐसी महिलायें हैं जो अभी भी इन कप के इस्तेमाल को लेकर सहज नहीं हैं। माहवारी कप के इस्तेमाल से पहले महिलाओं के मन में कई प्रश्न रहते हैं जैसे कि क्या माहवारी कप का इस्तेमाल पूरी तरह सुरक्षित है? क्या ये सैनिटरी नैपकिन से अधिक सुविधाजनक हैं? क्या माहवारी कप पहन कर चलने फिरने में मुश्किलें आती हैं? तो मैं आपको माहवारी कप के बारे में बताना चाहती हूं। मैं पिछले आठ वर्षों से इसका इस्तेमाल कर रही हूं और यह कप मुझे बहुत ही लाभदायक लगता है।

माहवारी कप क्या है - यह कप के आकार का एक उपकरण है जिसका इस्तेमाल पीरियड के दौरान किया जाता है। इसे योनि में लगाया जाता है जिससे माहवारी के दौरान निकलने वाले खून को इस कप में इकठ्ठा किया जा सके।

एक ही कप का उपयोग पांच साल तक कर सकते हैं

माहवारी कप के फायदे क्या हैं -

- इस कप को लगाने के बाद ऐसा महसूस नहीं होता कि माहवारी या पीरियड चल रहे हैं। यह कप इतना आरामदायक है कि आपको अहसास भी नहीं होगा कि आप कोई चीज लगाए हो।
- इस कप का सबसे बड़ा फायदा यह है कि पैड कई बार लीक हो जाता है, ब्लड बाहर आ जाता है, कपड़े खराब हो जाते हैं लेकिन माहवारी कप में ऐसा कोई जरिया ही नहीं है कि रक्त बाहर आए।
- माहवारी कप सैनिटरी नैपकिन की तरह खून को सोखते नहीं हैं जिससे किसी भी तरह के संक्रमण का खतरा कम रहता है।
- स्पोर्ट्स वालों के लिए तो यह बहुत ही अच्छा है। अगर आप खेल में भाग ले रहे हैं या आफिस जा रहे हैं तो उस समय आपको महसूस ही नहीं होगा कि आपकी माहवारी चल रही है।
- एक फायदा है कि कपड़े गंदे नहीं होते और कीमत भी अगर आप बाजार से अच्छी क्वालिटी का लेते हैं तो छह सौ रूपये का पड़ेगा लेकिन **लिवफ्रेश आनंदा और विचार समिति** के माध्यम से लेते हैं तो मात्र दो सौ रूपये में मिल जाएगा और इसकी सबसे बड़ी खूबी है कि यह पांच वर्ष तक चलता है। एक पैड तो सिर्फ छह घंटे चलता है और एक ही माहवारी कप को पांच वर्ष तक उपयोग कर सकते हैं।

माहवारी कप के इस्तेमाल का तरीका -

सबसे पहले माहवारी कप को फोल्ड करके अपनी योनि के अंदर डालना होता है। माहवारी कप जब योनि के अंदर चला जाए तो इसे हल्का सा घुमाएँ जिससे यह अच्छी तरह फिट हो जाए।

माहवारी कप का साइज कैसे चुनें -

माहवारी कप के साइज को लेकर विशेष ध्यान दें क्योंकि गलत साइज का कप लगाने से एक तो असुविधा होगी दूसरा लीकेज का भी डर बना रहेगा। यदि आपकी उम्र 25-30 वर्ष से कम है तो आप स्माइल साइज का उपयोग कर सकती हैं और यदि आपकी उम्र 30 वर्ष से ज्यादा है या आप एक बच्चे को जन्म दे चुकी हैं तो आप मीडियम और लार्ज कप का उपयोग कर सकती हैं।

माहवारी कप का उपयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें -

- माहवारी के समय अधिकतम छह घंटे के बाद इस कप को निकालकर साफ करके वापस इसे लगा सकते हैं।
- पीरियड के दौरान एक ही कप को आप पानी से धोकर कई बार इस्तेमाल कर सकती हैं लेकिन अगले पीरियड में इस्तेमाल करने से पहले स्टेरलाइज करना ना भूलें।
- स्टेरलाइज करने के लिए कप को पानी में डालकर कुछ देर तक उबालना चाहिए या फिर इसी के साथ एक सैनिटाइजर आता है उससे साफ करना चाहिए।

मोहल्ला विकास टीम में माहवारी (मेंस्ट्रुअल) कप जागरूकता अभियान चलाया गया

समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने माहवारी कप के बारे में महिलाओं को जागरूक किया।

एक वक्त था जब पीरियड्स पर महिलाएं और लड़कियां छुप- छुपकर बात किया करती थीं, लेकिन अब इस मुद्दे पर न सिर्फ खुलकर बात होती है बल्कि इसको लेकर जागरूकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं। हर महिला चाहती है कि पीरियड्स के दिन उसके लिए सुविधाजनक हों। रक्तस्राव से कपड़ों पर दाग न लगें, इसके लिए कुछ सेनेटरी पैड्स का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन ज्यादा लीकेज होने पर इन्हें बार-बार चेंज करना काफी समस्या होती है और दाग लग जाएं, तो उसकी समस्या अलग। विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करते हुए समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने राजीवनगर मोहल्ला विकास टीम एवं तिलकगंज मोहल्ला विकास टीम की 70 से अधिक महिलाओं को बताया कि आज भी ऐसी बहुत महिलाएं हैं, जो माहवारी (मेंस्ट्रुअल) कप के बारे में नहीं जानतीं। यहां तक कि इसके बारे में बात करने और इन्हें खरीदने में उन्हें झिझक होती है पर हमें सही चीजों को अपनाना चाहिए। माहवारी कप की पूरी जानकारी समिति सचिव आकांक्षा मलैया द्वारा माहवारी (मेंस्ट्रुअल) कप

जागरूकता की पूरी जानकारी वीडियो के माध्यम से दिखायी गयी है।

सुनीता अरिहंत ने महिलाओं को माहवारी के बारे में समझाते हुए कहा कि महिलाएं पीरियड्स शब्द बोलने की जगह कोड वर्ड में बात करती हैं। ये कोड वर्ड बताते हैं कि महिलाओं के लिए माहवारी आज भी शर्म या झिझक की बात क्यों है? हमारा समाज कागजों पर प्रगतिशील हो रहा है, लेकिन दिमागी तौर पर आज भी कुंठाओं और झिझक से भरा है। साधारण सा शब्द पीरियड्स इतना कठिन बना दिया है कि लोग सिर्फ ये शब्द बोलने की जगह इशारों में बात करते हैं। सिर्फ ग्रामीण महिलाएं ही पीरियड्स या माहवारी बोलने में नहीं कतराती हैं, बल्कि शहर के पढ़े-लिखे लोग भी इस शब्द को बोलने में शर्म महसूस करते हैं। पीरियड्स शुरू होते ही लड़कियों को समझाया जाता है कि तुम सयानी हो गई हो। इन शब्दों से कुल मिलाकर परिवार यह समझाना चाहता है कि अब लड़की शादी के लायक हो गई है। मतलब माहवारी के दिनों में लड़कियों को जिस तरह की डाइट की जरूरत होती है वो उन्हें नहीं मिलती। इसके बदले में मिलती हैं हिदायतें। महिलाएं पीरियड्स पर चुप्पी रखती हैं। यही डर और शर्म आगे जाकर इंफेक्शन, ब्लीडिंग और जान तक का खतरा बढ़ा देता है। जहां-जहां शिक्षा कम है वहां पीरियड्स से जुड़े मिथक ज्यादा हैं। बच्चियों को जब पीरियड्स से जुड़ी सही जानकारी नहीं होती तो वे इसके चक्र को भी नहीं समझ पातीं। कई बच्चियों जिनको पहली बार पीरियड्स आते हैं तो चौंक जाती हैं। उन्हें नहीं मालूम होता कि नॉर्मल पीरियड्स की टाइमिंग 3 से 4 दिन है, अगर किसी को 15 दिन तक ब्लीडिंग हो रही है तो वह दिक्कत है। ऐसे में नॉर्मल पीरियड्स तक की जानकारी उनके पास नहीं होती और ज्यादा ब्लीडिंग होने से शरीर में दूसरी बीमारियां पनपने लगती हैं।

85 साल की आयु में शुरु किया स्टार्टअप, कमाई से खरीदी पहली कार

ऐसा माना जाता है कि काम करने और आराम करने की एक उम्र होती है। अक्सर लोगों को लगता है 58-60 साल की उम्र के बाद काम से रिटायर होकर आराम का जीवन जियेंगे। अधिकांश लोग यही करते भी हैं। लेकिन क्या आप सोच सकते हैं कि 85 साल की उम्र में कोई बुजुर्ग स्टार्टअप शुरू करे और उसमें बड़ी सफलता भी हासिल कर ले। एक पल को ऐसा सोचना नामुमकिन लगता है। लेकिन इस बात को प्रमाणित करने का काम किया है गुजरात के दंपति राधा कृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी ने। इन्होंने न केवल इस उम्र में आकर कंपनी की शुरूआत की बल्कि उसे सफल बना कर अपनी कमाई से पहली कार भी खरीदी है। इस दंपती की कहानी किसी सुंदर काल्पनिक कहानी की तरह लगती है लेकिन हकीकत यह है कि यह कहानी असल जिंदगी की है। राधा कृष्ण चौधरी जी ने रिटायरमेंट के बाद अपने जीवन में आराम करने की बजाय अपनी पहचान बनाने की ठानी। उन्होंने काफी रिसर्च करने के बाद, बालों के झड़ने और गंजेपन जैसी अनेक समस्याओं के समाधान के लिए मार्केट में एक नया हर्बल ऑयल पेश किया। जिसके चलते आज उन्होंने अपनी मेहनत से सफलता की नई कहानी लिखी है। लेकिन उनका यह सफर इतना भी आसान नहीं था।

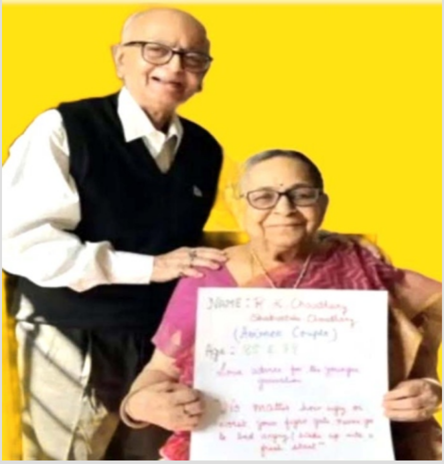

आइए जानते हैं उनके जीवन की प्रेरक कहानी के बारे में।

रिटायरमेंट के दस साल बाद, शुरु किया बिजनेस - आमतौर पर 85 साल की उम्र, ऐसी उम्र मानी जाती है जहां लोग घर और नौकरी की जिम्मेदारी से मुक्त होकर आराम की जिंदगी गुजारना चाहते हैं। लेकिन गुजरात के राधा कृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी शकुंतला चौधरी की जोड़ी, उम्र के इस मोड़ पर भी कुछ नया शुरू करने का जज्बा रखती हैं। यही कारण है कि उन्होंने आराम करने की बजाय काम करने का विकल्प चुना। उन्होंने काफी रिसर्च के बाद पचास जड़ी-बूटियों से तैयार हर्बल ऑयल को तैयार किया। राधा कृष्ण चौधरी ने अविमी हर्बल की शुरुआत करने के सिर्फ 6 महीने के अंदर इसे एक शानदार कंपनी बना दिया है। दुनिया भर के

लोग अविमी हर्बल के प्रोडक्ट को पसंद कर रहे हैं और वे इसे मंगाना चाहते हैं। आयुर्वेद की मदद से वह लोगों के बालों की समस्या का समाधान निकाल रहे हैं और लोगों का भरोसा उनके कारोबार पर लगातार बढ़ रहा है।

बेटी की समस्या देख मिली स्टार्टअप शुरू करने की प्रेरणा - राधा कृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी शकुंतला चौधरी ने रिटायर होने के बाद अपनी बेटी के साथ रहने का फैसला किया। किसी बीमारी की वजह से उनकी बेटी के बाल गिरने लगे। जिसे देखकर उन्हें लगा कि उन्हें कुछ करना चाहिए। उन्होंने अपने कंप्यूटर पर बालों के झड़ने की समस्या पर रिसर्च की। इस दौरान उन्होंने कई शोध पत्रों का भी अध्ययन किया। जिसके बाद उन्होंने घर पर ही जड़ी-बूटियों के जरिए तेल बनाने का निर्णय लिया। काफी शोध करने के बाद बुजुर्ग दंपत्ति ने 50 से ज्यादा जड़ी बूटियों के साथ कोल्ड-प्रेस्ड तकनीक से इस हेयर ऑयल को तैयार किया। जिसके बाद देखते ही देखते उनका यह तेल काफी पसंद किया जाने लगा।

नाना जी के नाम से हो गए प्रसिद्ध - कुछ ही समय में अपनी मेहनत से सफलता प्राप्त करने वाले राधा कृष्ण चौधरी जी का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। लोग उन्हें नानाजी के नाम से संबोधित करने लगे। इंस्टाग्राम पर नाना जी के वीडियो को करीब 2 करोड़ लोग देख चुके हैं। जून 2021 में राधा कृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी शकुंतला चौधरी ने आयुर्वेदिक हेयर केयर कंपनी अविमी हर्बल की शुरुआत की जो आज सफलता की नई कहानियां लिख रही है।

85 साल की उम्र में राधा कृष्ण चौधरी और उनकी पत्नी शकुंतला चौधरी ने खुद की पहचान बनाकर और बिज़नेस की शुरूआत करके यह दिखा दिया कि किसी भी काम को शुरु करने की कोई उम्र नहीं होती है। इंसान किसी भी उम्र में सफलता हासिल कर सकता है। आज वो लाखों लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। युवा वर्ग नौकरी न मिलने पर निराशा की ओर बढ़ रहे हैं। युवा वर्ग को राधा कृष्ण चौधरी जी और उनकी पत्नी की इस कहानी से कुछ सीखना चाहिए।

-विवेक बिन्द्रा

ऐसे शुरू किया स्टार्टअप

तेल की मिली सफलता को देख उन्होंने इसे स्टार्टअप के रूप में स्थापित करने का विचार किया। दंपती के मन में हेयर केयर कंपनी शुरू करने का ख्याल आया। उनकी पत्नी ने उनका पूरा साथ दिया। करीब 1 साल की रिसर्च करने के बाद उन्हें इस हर्बल ऑयल को बनाने में सफलता मिली जिससे उनकी बेटी के गिरते बालों को रोकने में मदद मिली और उससे उसके बालों का टेक्सचर भी बदल गया। काफी कम समय में उनके पास ज्यादा मात्रा में ऑर्डर आने लगे। बिजनेस में मिली सफलता को देख उन्होंने पहली बार अपनी कमाई से कार खरीदी।

220 स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को लीफी एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क करवाया जाएगा अध्ययन

शिक्षकों ने श्री आंनदपुर साहेब पंजाब से लिया था प्रशिक्षण, 25 जुलाई से कक्षाएं प्रारम्भ

श्री आनंदपुर साहेब पंजाब में विचार समिति की टीम प्रशिक्षण लेते हुए।

लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया तथा विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया गया। प्रोजेक्ट की जानकारी देते हुए समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने कहा कि यह प्रोजेक्ट कक्षा 1 से 5वीं तक के स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से शुरू किया जा रहा है। प्रशिक्षण के लिए शहर के होनहार शिक्षकों को चयन प्रक्रिया के बाद सात दिवसीय वर्चुअल माध्यम से एवं तीन दिवसीय प्रशिक्षण के लिए श्री आनंदपुर पंजाब भेजा गया था। जहां लीफी प्रशिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन में गुर सिखाये गये। सभी तैयारियों के साथ 25 जुलाई से इन बच्चों की कक्षाएं प्रारंभ हो गई हैं। इस प्रक्रिया में वे बच्चे शामिल हैं जो स्कूल में नामांकित नहीं या नामांकित है पर स्कूल नहीं जाते और स्कूल जाते हैं तो सीखने की गति धीमी है। लीफी 'सुनो और सीखो' नामक एक लर्निंग मॉडल पर कार्यरत है, जो बच्चों को नए विषयों को नए तरीकों से सीखने में मदद करता है।

लीफी संस्थापक रमन बहल ने कहा कि हमारा उद्देश्य है 'पढ़ेगा हर बच्चा-बढ़ेगा हर बच्चा' हम पूरे भारत में सामूहिक संरचना के माध्यम से युवाओं, संस्थाओं के माध्यम से स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के लिए काम करना चाहते है। जिससे वे आजीवन सीखने के लिए

प्रशिक्षण उपरांत बच्चों को अध्ययन करवाती हुई ज्योति जैन, कविता साहू।

तत्पर हो सके। प्रारंभिक प्रशिक्षण में शिक्षकों को यह बताना कि वह बच्चे कौन है जिनके लिए हम काम कर रहे है। लीफी सहसंस्थापक गायत्री देय ने जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षा में सबसे बड़ा मुख्य हिस्सा सीखना और सिखाना होता है। इसके लिए तीन विधियों का मुख्य रूप से प्रयोग कर रहे हैं।

आई डू - बच्चों को कार्यविधि के माध्यम से सिखाना।

वी डू - इस प्रक्रिया में बच्चे एवं शिक्षक समान रूप से कार्य विधि में सहयोगी होते हैं।

यू डू - इस प्रक्रिया में संपूर्ण क्रिया विधि बच्चे करते हैं।

लीफी अधिकारी फनसाब आफरीन, रुबीना शर्मा ने मार्गदर्शन किया।

प्रशिक्षण लेकर आई **काजल जैन अरिहंत** बिहार कालोनी से है और स्नातक के साथ बीएड कर रही है। 45 बच्चों को इस अभियान से जोड़कर अध्ययन करवा रही हैं। वे बताती हैं कि प्रशिक्षण में हमें एक पारिवारिक माहौल मिला कहीं भी यह नहीं लगा हम पढ़ने आये है। हमारे साथ एक सामान्य व्यवहार किया गया जो हमें बच्चों को सिखाने के लिए प्रयोग करना है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती यही कि बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करना है साथ ही परिवार को शिक्षा की आवश्कता से अवगत करवाना है। उन बस्तियों से बच्चों को चुनना जिनका स्कूली शिक्षा से कोई वास्ता नहीं रहा है। हमे यह खुशी है इन सभी बच्चों के लिए समिति और लीफी के माधयम से सुनहरा मौका मिला है। एक सामान्य सर्वे में बच्चों के ज्ञानात्मक स्तर के परीक्षण की जांच की जिसके द्वारा बच्चों की आवश्कताओं, शैक्षणिक स्तर को परखा जा सके।

ज्योति जैन मड़देवरा (शाहगढ़) से हैं, इन्होंने डॉ हरिसिंह गौर विश्विद्यालय हिंदी विषय से एमए किया है। पिछले वर्षों से बच्चों को पढ़ाती आ रही हैं। उनका कहना है ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के लिए विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। इस अभियान के माध्यम से 45 बच्चों को चयनित कर सीखने में मदद कर रही हैं। प्रशिक्षण की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि नई-नई चीजों को जानने का मौका मिला। आउट ऑफ स्कूल के बच्चे कौन-कौन होते है। उनके लिए किस तरह की शिक्षा देना है। मेरे लिए यह प्रशिक्षण काफी सीखने लायक रहा अब बच्चों के सोचने और उनके मस्तिष्क के विकास के आयाम लगातार बदल रहे है। आधुनिक शिक्षा पद्धतियां किस तरह उनके लिए बेहतर सीखने में मददगार होगी। लीफी के पाठ्यक्रम के मूल में सीखना-सिखाना है जो

पूजा मिश्रा, काजल जैन बच्चों को अध्ययन करवाती हुई।

बच्चों को काफी लाभदायक होगा।

कविता यादव संतरविदास वार्ड निवासी है एवं इतिहास विषय से मास्टर डिग्री कर रही है। लीफी चेंगमेकर्स अभियान के तहत 45 बच्चों को चयनित कर कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों का बैच बनाकर अध्ययन करवा रही हैं। वे प्रशिक्षण के बारे में बताती हैं कि लीफी द्वारा पूरी दिनचर्या की रुपरेखा निर्धारित रहती थी। सुबह से योग, क्लासेस सेसन में सीखना, उन बच्चों को कैसे ढूढ़ें जिन्हे इस तरह शिक्षा की आवश्यकता है।

पूजा मिश्रा गुरुगोविंदसिंह वार्ड से है, बी.कॉम. की पढ़ाई कर रही हैं। 40 बच्चों को चयनित कर फैलोशिप के तहत घर पर अध्ययन करवा रही हैं। वे प्रशिक्षण के बारे में कहती हैं कि मुख्य रूप से यह सीखना रहा की बच्चों का बौद्धिक स्तर कैसा है। वे क्या सोचते/समझते है? सबसे मुख्य बात यह रही कि किताबी शिक्षा के साथ गतिविधियों के द्वारा सीखना है। असिसमेंट दो प्रकार से ले रहे है ओरल असिसमेंट-रिटर्न असिसमेंट।

प्रियंका साहू संतरविदास वार्ड में बच्चों को अध्ययन करवाती हुई।

प्रियंका साहू संतरविदास वार्ड निवासी हैं एवं स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। 45 अलग -अलग ग्रेड के बच्चों को चयनित कर अध्ययन करवा रही हैं। शिक्षण विधियों में मुख्यत: बच्चों को कैसे सिखाना है, जो उनके लिए रुचिकर बन सके। साथ ही हम लोग बच्चों के कक्षा स्तरीय ज्ञान को देखते है फिर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप पढ़ाते हैं। हमें बहुत सीखने को मिला। प्रशिक्षण में समिति देश प्रमुख भुवनेश सोनी, विचार समिति की सदस्य पूजा लोधी, पूजा प्रजापति शामिल थीं।

मोहल्ला विकास योजना अंतर्गत भ्रमण में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के साथ कई मुद्दों पर चर्चा

समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया मोहल्ला विकास की टीमों से चर्चा करते हुए।

समिति द्वारा संचालित 127 मोहल्ला विकास टीमें बुंदेलखंड के सुनियोजित विकास को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य कर रही हैं। इस योजना के माध्यम से नागरिकों में सामाजिक दायित्व की भावनाओं को बढ़ाना, सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ाना, उन्हें अपने जीवन के निर्णय विकास की दृष्टि से लेने को प्रेरित करना, विभिन्न विषयों पर जागरूकता लेकर लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना है। सभी लक्ष्यों के साथ समिति संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया एवं समिति के मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने मोहल्ला भ्रमण के दौरान भूतेश्वर मोहल्ला टीम समन्वयक सरिता गुरु, संत रविदास वार्ड मोहल्ला टीम समन्वयक राजा अहिरवार, भगवानगंज मोहल्ला टीम समन्वयक प्रभा साहू, तुलसीनगर मोहल्ला टीम समन्वयक ममता अहिरवार के निर्देशन में संचालित मोहल्ला परिवारों द्वारा कोरोनाकाल में किये गए जनकल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा की और भविष्य में किसी आपातकालीन परिस्थियों में ऐसी ही एकजुटता रहने पर चर्चा हुई।

कोरोनाकाल से जनसामान्य की

नवगठित टीमों की महिलाओं से चर्चा करते हुए समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत।

आर्थिक रूप से बहुत ही हानि हुई है, परिचर्चा में रोजगार की दिशा में समिति टीमों की गतिविधियां को तैयार करना। जिसमें 127 मोहल्ला टीमों के साथ 16 स्व-सहायता समूहों की महिलाओं को रोजगार से सीधा जोड़ा जा सके। इस दिशा में गोबर से बने दियों एवं अन्य सामग्री बड़ी कारगर साबित हुई एवं इसके अलावा कोरोना काल से बंद हथकरघा प्रशिक्षण जल्द की पुनः शुरू करने पर विचार हुआ। समन्वयक सरिता गुरु मोहल्ले में सफाई, स्वच्छता, महिलाओं को मासिक धर्म से संबंधित जागरूकता, पर्यावरण के मुद्दे पर कहती हैं कि हम लगातार देख रहे हैं कि आज के समय में गर्मी बढ़ती जा रही है। बारिश भी अच्छी नहीं हुई है। जिसका मुख्य कारण लगातार पेड़ों की कटाई और नये पौधों को न लगाना है। इस संकट से निपटने के लिए कहीं न कहीं हम सभी को यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि अधिक से अधिक मात्रा में पौधे लगाएं एवं उनका ध्यान रखें। तुलसी नगर समन्वयक ममता अहिरवार ने सामूहिक बैठक में रोजगार, परिवार नियोजन के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने गोमय धूपबत्ती के उपयोग तथा सभी लोगों तक इसकी जागरूकता से संबंधित तथ्यों पर चर्चा की। पालक शकुंतला, रामा, माधवी, विमला आदि ने अपने विचार रखें। साथ ही समिति की ग्रामीण टीमों से चर्चा की।

पेड़ लगाएं, आने वाली पीढ़ी का जीवन बचाएं : कपिल मलैया

हवा, पानी, भोजन, धूप सब कुछ हमें प्रकृति से ही तो मिलता है शायद इसलिए प्रकृति को ईश्वर के रूप में भी देखते हैं लेकिन जब आराम और सुविधा की बात आती है तो हम सब भूल जाते हैं कि प्रकृति ने जो हमें दिया है उसका संरक्षण करना भी हमारा कर्तव्य है। हम विलासिता पूर्ण जिंदगी जीने की चाह में उस हद तक प्रकृति का दोहन कर लेते हैं जिसका आने वाले वक्त में मानव अस्तित्व के साथ बाकी जीवन पर भी भयानक असर पड़ सकता है। मनुष्य अपनी सुविधाओं और विकास की दौड़ में भूलता जा रहा है कि जिस हिसाब से वह पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता जा रहा है उसका आने वाली पीढ़ियों पर कितना बुरा असर पड़ेगा। आज तमाम तरह की बीमारियां हो रही हैं। बढ़ते वायु प्रदूषण ने बच्चों और बुजुर्गों का जीना मुहाल कर रखा है। इसके जिम्मेदार भी हम ही हैं। जिस धरती से हमें जीवन मिला, बाकी सुख सुविधाएं मिल रही हैं उसे हरा भरा रखने की जिम्मेदारी भी हमारी है। पर्यावरण के प्रति लोगों की उदासीनता हमेशा से बड़ी चुनौती रही है। तेजी से बढ़ रहे प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के चलते विश्व में तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। बढ़ते तापमान के चलते बाढ़, सूखा, तूफान जैसी चरम घटनाओं का होना आम होता जा रहा है, साथ ही इनकी तीव्रता में भी वृद्धि हो रही है। जहां जंगलों में आग लगने की घटनाएं लगातार बढ़ रही है। इन सबके लिए सरकार की

जितनी जिम्मेदारी है उतनी ही आम लोगों की भी है।

समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने एक रिपोर्ट के आधार पर बताया कि पिछले 20 वर्षों में तापमान तेजी से बढ़ा है यदि तापमान में हो रही वृद्धि की यह दर जारी रहती है, तो भारत में अगले दो दशकों के भीतर पारा 1.5 डिग्री सेल्सियस के खतरे के निशान से जल्द ही ऊपर निकल जायेगा। ये बहुत दुखद है कि जिस देश में पेड़ों को बचाने के लिए चिपको जैसा महान आंदोलन चला हो, जिस देश में प्रकृति को पूजा जाता हो वहां के लोग अब पर्यावरण को लेकर बहुत उदासीन हो चुके हैं। स्वच्छता को लेकर भी देश में व्यापक अभियान वर्तमान सरकार की ओर से चलाया जा रहा है लेकिन जनभागीदारी के अभाव में उसमें उतनी सफलता नहीं मिल रही जितनी मिलनी चाहिए। उदाहरण के लिए नदियों की सफाई का मुद्दा ही देख लीजिए। वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट 2021 के अनुसार लगातार चौथे साल दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी है। इसी रिपोर्ट के अनुसार मध्य और दक्षिण एशिया के 15 सबसे प्रदूषित शहरों में अकेले 11 शहर भारत के हैं। पर्यावरण संरक्षण हमारी संस्कृति का अंग है, परंतु मानव ने अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की प्रवृत्ति ने पर्यावरण संकट की नई चुनौती को जन्म दिया है। कोविड-19 महामारी ने हमें साफ हवा की

पिछले 20 वर्षों में तापमान तेजी से बढ़ा है यदि तापमान में हो रही वृद्धि की यह दर जारी रहती है तो भारत में अगले दो दशकों के भीतर पारा 1.5 डिग्री सेल्सियस के खतरे के निशान से जल्द ही ऊपर निकल जायेगा।

कीमत समझा दी है। मैं आप सभी को आने वाले संकटों के माध्यम से गंभीर मुद्दों पर ध्यान दिलाना चाहता हूं। क्योंकि अगर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो निश्चित तौर पर धरती पर जीवन को बचाना मुश्किल हो जायगा। अभी तक विभिन्न प्रकार की प्रजातियां जिसमें कई छोटे-बड़े जीव, कई प्रकार के पौधे प्राकृतिक स्त्रोत गायब हो चुके है। विश्व पर्यावरण लगातार बिगड़ता चला जा रहा है। मानव इतिहास में दुनिया गर्म हो गई है। हजारों एकड़ भूमि बंजर हो चुकी है। इस स्थिति में हम सभी को पर्यावरण बचाने के लिए छोटा सा प्रयास करना चाहिए। वर्षा का मौसम पेड़ लगाने के लिए सबसे अनुकूल होता है। हम से जितना हो सके पेड़ लगाए और उनका ध्यान रखे।

कोरोना वारियर्स के सम्मान में विचार समिति प्रांगण में 6-8 फीट के पौधे अब यह 20-25 फीट ऊंचे हो गए

20-25 फीट ऊंचे हुए कोरोना वारियर्स के सम्मान में लगाए पौधे।

विचार समिति के प्रांगण में दो साल पहले पौधा लगाकर कोरोना वारियर्स का सम्मान किया गया था। इन पौधों से लगी दीवार पर उन वारियर्स के नाम लिखे गए हैं जिन्होंने कोरोना संकट काल में समिति के माध्यम से हजारों लोगों की मदद की थी। विचार समिति के संस्थापक अध्यक्ष कपिल मलैया ने बताया कि 6-8 फीट के यह पौधे लगाए गए थे जो अब 20-25 फीट के हो गए हैं। इनकी देखभाल बच्चों की तरह की गई क्योंकि यह पौधे उन वारियर्स के सम्मान के रूप में लगाए गए थे जिन्होंने इस कोरोना संकट काल मे विचार समिति की तरफ से बगैर डरे बस्तियों में जाकर उन घरों में जहां वास्तव में जरूरत थी वहां पहुंचकर अनाज पहुंचाया, भोजन पहुंचाया। कोरोना को लेकर व्यवस्था संभाल रहे सुरक्षा कर्मियों, पुलिस कर्मियों को समय-समय पर सैनिटाइजर एवं अन्य सुरक्षा सामग्री उपलब्ध कराकर उनका हौसला बढ़ाया। राजमार्ग पर जाकर लगातार 17 दिन तक पलायन कर रहे मजदूरों को खिचड़ी व खाना, पानी बांटा। मोहल्ला-मोहल्ला जाकर

कोरोना वारियर्स के सम्मान में पौधे लगाए थे जो 6-8 फीट के थे अब वह 20-25 फीट ऊंचे हो गए।

जागरूकता रथ के माध्यम से कोरोना जागरूकता अभियान चलाया। लगातार छह माह से ज्यादा समय से बुंदेलखंड मेडीकल कालेज में संचालित विचार सहायता केंद्र में यह कोरोना वारियर्स सुबह 6 से रात के 12 बजे तक अपनी सेवाएं दे रहे थे। इस योजनाओं के अंतर्गत सागर के बुंदेलखंड मेडिकल कालेज में चलाई जा रही विचार हेल्प-डेस्क कोविड 19 मरीज और उनके परिजनों को संजीवनी बनकर आई थी। इसके माध्यम से मरीजों और उनके परिजनों की सभी समस्याओं को सुनकर उनका निदान किया जाता था। समिति द्वारा हेल्प डेस्क के माध्यम से 180 दिनों में 1565 समस्याओं का निदान किया गया था।

इन कोरोना वारियर्स के सम्मान में लगाए गए थे पौधे

राजेश सिंघई, सुनीता अरिहंत, नितिन पटैरिया, अखिलेश समैया, सूरज सोनी, सौरभ रांधेलिया, रामकृष्ण मिश्रा, कार्तिक भाई पटेल, धवल कुशवाहा, अनुराग विश्वकर्मा, तुलसीराम, देवेन्द्र वर्मा, सुनील जादूगर, राहुल अहिरवार, शिखा चौरसिया, पूजा लोधी, पूजा प्रजापति, विनोद विश्वकर्मा, सुनील साहू, साहब सिंह, नीलेश पटेल, अरविंद अहिरवार, राम कुमार वाल्मिकी, बद्री सेन, इंदरसिंह, जवाहर लाल अहिरवार, प्रदीप आठिया, रामकुमार रैकवार, शरद मोहन दुबे, संजेश सिंह, और आशीष सिंह के विशेष योगदान को देखते हुए यह सम्मान दिया गया था।

समिति ने विश्वविद्यालय में रोपा दुर्लभ कल्पवृक्ष का पौधा

विश्वविद्यालय परिसर में कल्पवृक्ष का पौधा रोपते हुए समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य।

हरियाली अमावस्या के अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में कुलपति कार्यालय के बाजू वाले प्रांगण में विचार समिति द्वारा दुर्लभ प्रजाति का कल्पवृक्ष लगाया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम अपने विश्वविद्यालय, विभाग, नगर, घर एवं आसपास वृक्ष लगाएंगे और उनको संरक्षित भी करेंगे। हम अन्य लोगों को भी वृक्षमित्र बनकर वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करेंगे।

इस अवसर पर कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि वृक्षारोपण कर इस कार्यक्रम के माध्यम से इस बात पर जोर दिया जाता है कि एक स्थिर और स्वस्थ समाज के संरक्षण के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना कितना महत्वपूर्ण है।

समिति के उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने बताया कि हम सभी जानते कि प्रकृति जीवन का आधार है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का महत्व है। समिति के मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने कहा कि विचार समिति द्वारा उपलब्ध कराया गया कल्पवृक्ष अत्यंत दुर्लभ प्रजाति का वृक्ष है। इस वृक्ष को हमारे वेद पुराणों और शास्त्रों में विशेष स्थान प्राप्त है। इस वृक्ष की अनेक तरह की गुणवत्ताओं के कारण ही यह वृक्षों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

इस अवसर पर राजकुमार नामदेव, राहुल अहिरवार, जवाहर दाऊ, माधव यादव, विनय चौरसिया उपस्थित थे।

॥विचार संस्था॥
(स्थापना वर्ष 2003)

गोमय धूपबत्ती

शुद्ध देशी गाय के गोबर से निर्मित, घी एवं प्राकृतिक जड़ीबूटी से निर्मित

- यह धूपबत्ती वातावरण को शुद्ध सुगंधित करके समस्त नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करके सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करती है।
- इस धूपबत्ती को जलाने मात्र से घर/आफिस के वास्तु दोष दूर हो जाते हैं।
- यह वातावरण के सूक्ष्म हानिकारक जीवाणु को नष्ट करती है।
- इसे बनाने में किसी भी प्रकार के केमिकल का उपयोग नहीं किया गया है।
- धूपबत्ती में मिलाये गये गोबर एवं घी के जलने से ऑक्सीजन उत्पन्न होती है।
- प्राकृतिक तरीके से निर्मित यह धूपबत्ती सभी प्रकार के मच्छरों, मक्खी एवं कीटों को भगाने के लिए प्रभावी है।
- भगवान को चढ़ाए गए फूलों का उपयोग किया गया है।
- गोमय धूपबत्ती सीसा रहित है। अगरबत्ती में सीसा होता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

Eco friendly | Non Toxic | Insect Repellant | Hand Made

घटक :- देशी गाय का गोबर, शुद्ध घी, नीमपत्ती, तुलसी, कपूर, गुग्गल, लौंग, गुलाबपत्ती, लोबान, हवन सामग्री एवं जड़ी बूटी।

पता - विचार समिति, 258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज, आदिनाथ कार्स प्रा.लि. के पीछे, सागर (म.प्र.), मो. 9575737475, 07582-224488

नई टीम का गठन

समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने मोहल्ला विकास योजना के अंतर्गत पंतनगर, रानीपुरा एवं तिलकगंज में किया नई टीम का गठन।

मोहल्ला विकास योजना समिति की लोक कल्याणकारी योजनाओं में से एक है। इस योजना का उद्देश्य बुंदेलखंड का सुनियोजित विकास करना है। जिसमें समानता, स्वतंत्रता, समान अवसरों के साथ दायित्वों का निर्वाहन, सामाजिक जिम्मेदारी, जीवन के निर्णय विकास की दृष्टि, जागरूकता के साथ जीवन स्तर में सुधार लाना है। मोहल्ला विकास योजना के अंतर्गत 128 टीमों में सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता करते हुए शिक्षा, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य, नशा मुक्ति अभियान, प्राकृतिक खेती, पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के साथ स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। इसी लक्ष्य के साथ समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने पंत नगर टीम, रानीपुरा गंगा मंदिर टीम, तिलकगंज आदि तीन स्थानों पर टीम गठन की प्रक्रिया को संपन्न करवाया। उन्होंने मोहल्ला विकास योजना की जानकारी देते हुए कहा 100 घरों के एक समूह को एक मोहल्ले का नाम दिया जाता है। इन 100 घरों की जिम्मेदारी कम से कम 11 सदस्यों की टीम लेती है। टीम में एक पुरुष/महिला को सर्वसहमति से चयनित कर समन्वयक बनाया जाता है। जिसमें प्रत्येक पालक को 10 परिवारों की जिम्मेदारी दी जाती है। इस तरह से 10 पालक मिलकर मोहल्ला के क्रम से बने हुए 100 परिवारों को चिन्हित कर गठन किया जाता है। इस अवसर पर समन्वयक एवं पालक सदस्य के साथ समिति सदस्य राहुल अहिवार, विनय चौरसिया, भाग्यश्री राय उपस्थित थीं।

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर सागर 01-08-2022

मंडे पॉजिटिव • लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया तथा विचार समिति ने शहर में 5 कक्षाओं में लगा रखे हैं 5 शिक्षक

पढ़ाई छोड़ने वाले 220 विद्यार्थियों में शिक्षा की अलख जगा रहीं दो संस्था, अपने खर्च पर शिक्षक लगाकर बच्चों को कर रहीं शिक्षित

भास्कर संवाददाता | सागर

दो समाजसेवी संस्थाओं ने पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों में शिक्षा की अलख जगाने का बीड़ा उठाया है। इसके लिए लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया (लीफी) तथा विचार समिति ने जिले में लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप प्रोजेक्ट शुरू किया है। इसके तहत शहर में 5 स्थानों पर कक्षाएं लगाई जा रही हैं। 25 जुलाई से शुरू हुई इन कक्षाओं में 5 शिक्षक 220 बच्चों को कार्यविधि के जरिए शिक्षित कर रहे हैं। ज्यादातर शिक्षक यूजी और पीजी के विद्यार्थी हैं। जिन्हें पढ़ाने में पारंगत करने के लिए संस्थाओं ने श्री आनंदपुर साहेब पंजाब से निशुल्क प्रशिक्षण दिलाया है। साथ ही कक्षाएं संचालित करने के एवज में प्रति शिक्षक मासिक 3500 रुपए मानदेय दे रहीं हैं।

विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने कहा कि यह प्रोजेक्ट कक्षा 1 से 5वीं तक के शालात्यागी बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। पढ़ाने के लिए शहर के होनहार शिक्षकों को चयन प्रक्रिया के बाद 7 दिनी ऑनलाइन एवं 3 दिनी ऑफलाइन प्रशिक्षण के लिए श्री आनंदपुर पंजाब भेजा गया था। यहां लीफी प्रशिक्षकों ने पढ़ाने के गुर सिखाए। प्रोजेक्ट में वे बच्चे शामिल हैं, जो स्कूल में नामांकित नहीं या नामांकित हैं तो स्कूल नहीं जाते या उनके सीखने की गति धीमी है। लीफी सुनो और सीखो नाम के लर्निंग मॉडल पर कार्यरत है, जो बच्चों को नए विषय नए तरीकों से सीखने में मदद करता है।

लीफी संस्थापक रमन बहल ने कहा कि हमारा उद्देश्य है देश में सामूहिक संरचना के माध्यम से युवाओं, संस्थाओं के जरिए स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के लिए काम करना। जिससे वे आजीवन सीखने के लिए तत्पर हो सकें। प्रारंभिक प्रशिक्षण में शिक्षकों को यह बताया कि वह बच्चे कौन हैं जिनके लिए हम काम कर रहे हैं। सहसंस्थापक गायत्री देय ने बताया कि शिक्षा में सबसे जरूरी हिस्सा सीखना और सिखाना होता है। इसके लिए तीन विधियों का उपयोग कर रहे हैं। आई-डू यानी बच्चों को कार्यविधि के जरिए सिखाना। वी-डू प्रक्रिया में बच्चे एवं शिक्षक समान रूप से कार्यविधि में सहयोगी होते हैं और यू-डू प्रक्रिया में संपूर्ण क्रियाविधि बच्चे ही करते हैं।

शिक्षकों को श्री आंनदपुर साहेब पंजाब से निशुल्क दिलाया प्रशिक्षण।

सर्वे के जरिए परख रहे बच्चों की जरूरतें व शैक्षणिक स्तर

बीएड कर रही अरिहंत बिहार कालोनी निवासी काजल जैन 45 बच्चों को पढ़ा रही हैं। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में हमें पारिवारिक माहौल मिला। कभी नहीं लगा हम पढ़ने आए हैं। हमारे साथ सामान्य व्यवहार किया गया, जो हमें बच्चों को सिखाने में उपयोग करना है। सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करना और परिवार को शिक्षा की जरूरत से अवगत कराना है। उन बस्तियों से बच्चों को चुनना जिनका स्कूली शिक्षा से कोई वास्ता नहीं। सामान्य सर्वे में बच्चों के ज्ञानात्मक स्तर की जांच की है। ताकि बच्चों की आवश्यकताओं, शैक्षणिक स्तर को परखा जा सके। हिंदी से एमए पास मड़देवरा शाहगढ़ की ज्योति जैन 45 बच्चों को चयनित कर सीखने में मदद कर रही हैं। उन्होंने बताया लीफी के पाठ्यक्रम के मूल में सीखना-सिखाना है, जो बच्चों को काफी लाभदायक होगा। अभियान के जरिए नई-नई चीजों को जानने का मौका मिला। आउट ऑफ स्कूल बच्चे कौन-कौन होते हैं। उन्हें कैसे, किस तरह की शिक्षा देना है। आधुनिक शिक्षा पद्धतियां किस तरह उनके लिए सीखने में मददगार होंगी। इतिहास से एमए संतरविदास वार्ड निवासी कविता यादव कक्षा 1 से 5 तक के 45 बच्चों का चयन कर अलग-अलग बैच बनाकर अध्ययन करा रही हैं। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में बताया गया कि उन बच्चों को कैसे ढूंढें जिन्हें इस तरह की शिक्षा की आवश्यकता है। बीकॉम पास गुरुगोविंद सिंह वार्ड निवासी पूजा मिश्रा 40 बच्चों को चयनित कर फैलोशिप के तहत घर पर अध्ययन करा रही हैं। वे बताती हैं कि प्रशिक्षण में मुख्य रूप से यह सीखा कि बच्चों का बौद्धिक स्तर कैसा होगा। वे क्या सोचते, समझते हैं? खास बात यह रही कि किताबी शिक्षा के साथ गतिविधियों से सिखाना है। चयन के लिए बच्चों के मौखिक और लिखित टेस्ट ले रहे हैं। संतरविदास वार्ड निवासी यूजी पास प्रियंका साहू ने अलग-अलग ग्रेड के 45 बच्चों को चयनित किया है।

लीफ चेंजमेकर्स फैलोशिप प्रोजेक्ट के तहत कक्षा में पढ़ते बच्चे।

दैनिक भास्कर सागर 29-07-2022

विचार समिति ने विवि में रोपा दुर्लभ कल्पवृक्ष का पौधा

भास्कर संवाददाता | सागर

हरियाली अमावस्या के अवसर पर गुरुवार को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रांगण में विचार समिति द्वारा दुर्लभ प्रजाति का कल्पवृक्ष लगाया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम अपने विश्वविद्यालय, नगर, घर एवं आसपास पौधरोपण कर अन्य लोगों को भी वृक्षमित्र बनकर वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करेंगे। समिति की कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि पौधरोपण कर इस कार्यक्रम के माध्यम से इस बात पर जोर दिया जाता है कि एक स्थिर और स्वस्थ समाज के संरक्षण के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना कितना महत्वपूर्ण है। समिति के उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने बताया कि हम सभी जानते कि प्रकृति जीवन का आधार है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का महत्व है। समिति के मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने कहा कि विचार समिति द्वारा उपलब्ध कराया गया कल्पवृक्ष अत्यंत दुर्लभ प्रजाति का वृक्ष है। इस वृक्ष को हमारे वेद पुराणों और शास्त्रों में विशेष स्थान प्राप्त है। इस वृक्ष की अनेक तरह की गुणावत्ता के कारण ही यह वृक्षों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इस दौरान राजकुमार नामदेव, राहुल अहिरवार, जवाहर दाऊ, माधव यादव, विनय चौरसिया मौजूद थे।

विचार समिति ने विवि में रोपा कल्पवृक्ष

अतुल्य भास्कर, सागर

हरियाली अमावस्या के अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में कुलपति कार्यालय के बाजू वाले प्रांगण में विचार समिति द्वारा कल्पवृक्ष का पौधा रोपा गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हम अपने विश्वविद्यालय, विभाग, नगर, घर एवं आसपास वृक्ष लगाएंगे और उनको संरक्षित भी करेंगे। हम अन्य लोगों को भी वृक्षमित्र बनकर वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करेंगे। इस अवसर पर कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि वृक्षरोपण कर इस कार्यक्रम के माध्यम से इस बात पर जोर दिया जाता है कि एक स्थिर और स्वस्थ समाज के संरक्षण के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना कितना महत्वपूर्ण है। सौरभ रांधेलिया ने बताया कि हम सभी जानते कि प्रकृति जीवन का आधार है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस का महत्व है। प्रकृति को बचाकर अपनी भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित करना होगा और आज हम सभी इसका संकल्प लें। समिति के मुख्य संगठक नितिन पटैरिया ने कहा कि वृक्ष को हमारे वेद पुराणों और शास्त्रों में विशेष स्थान प्राप्त है। इस वृक्ष की अनेक तरह की गुणवत्ताओं के कारण ही यह वृक्षों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

मीडिया कवरेज

मंडे पॉजिटिव

वीरान जगह में बने जंगल

सीडबॉल, मियाबाकी तकनीक और ट्रांसप्लांट से छाई हरियाली

संदीप तिवारी | सागर

पर्यावरण संरक्षण के लिए शहर में हुए तीन प्रयोग काफी हद तक सफल रहे हैं। इससे 3 स्थानों पर जंगल तैयार हो गए हैं। इनमें से दो का आकार वृहद है। हजारों की संख्या में पेड़ हैं। जो जमीन कभी वीरान पड़ी रहती थी वहां पर सीडबॉल, मियावाकी पद्धति से पौधरोपण के साथ ही पौधों के ट्रांसप्लांट की तकनीक के प्रयोग किए गए। इनमें दो प्रयोग बिना शासकीय सहयोग के निजी संस्था ने किए।

मंगलगिरी: 4 साल में 9500 पौधे बने 15 फीट के पेड़

• **यह किया** - विचार समिति द्वारा 4 साल में यहां पर 10 हजार पौधे लगाए गए। 2 साल पहले मियावाकी पद्धति से भी 1500 पौधे डेढ़-डेढ़ फीट की दूरी पर लगाए गए।

अब : चार साल में ये पौधे अब 5 से लेकर 15 फीट तक के हो गए हैं। जबकि 2 साल पहले जो पौधे नई तकनीक से लगाए गए थे, उनकी लंबाई 15 फीट तक हो गई है। करीब 9500 पेड़ यहां पर हैं, जो अब जंगल का रूप ले चुके हैं।

राजघाट: 1 लाख 11 हजार बीज में से 14800 पेड़ बने

• **यह किया** - विचार समिति ने 2019 में 111000 सीडबॉल डलवाई थीं। शहर के करीब 13000 लोग और 30 संस्थाएं इसमें जुटीं। खाली पड़ी जमीन पर यह पहला नवाचार था।

अब : 14800 बीज अब पेड़ बन चुके हैं। इनकी ऊंचाई 5 फीट तक है। जो जमीन कभी वीरान थी वहां अब घना और बड़ा जंगल आकार ले चुका है। यह स्थान एक पिकनिक स्पॉट के रूप में भी तैयार हो गया है।

‖विचार समिति‖

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

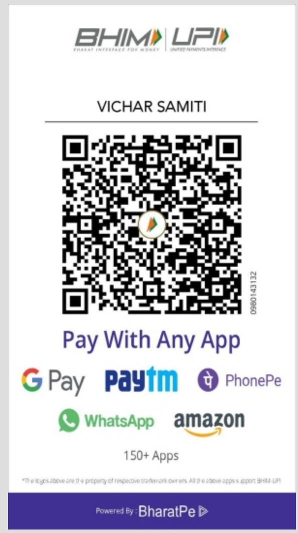

- संपर्क -

Website : vicharsanstha.com

Facebook : Vichar Sanstha

Youtube : Vichar Samachar

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002